कविता

14

# पेड़ों की अम्मा

प्रभात*

साँझ घिरे जब नींद की झपकी,
पेड़ों को आने लगती।
चुप-चुप-सी पेड़ों की अम्मा,
मन में पछताने लगती।

फैल फूट कर जगह घेर कर,
सोते परबत बड़े-बड़े।
मेरे दिल से टुकड़े कैसे,
सो पाएँगे खड़े-खड़े।

© NCERT not to be republished

* *स्वतंत्र लेखक*, जयपुर